VII
भारतेंदु और हिंदी नव जागरण

– डॉ. दीपक रामा तुपे,
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)
भ्रमणध्वनि: ८८०५२८२६१०
ई–मेल:dipaktupe1980gmail.com

सारांश

नवजागरण का हिंदी में अर्थ है किसी युग में विचार या व्यवहार के स्तर पर नवीन चेतना जगाना। अंग्रेजी में इसे रेनांसा कहते हैं जिसका मूल अर्थ नवजागरण ही है। भारत में हिंदी प्रदेशों में भारतीय नवजागरण का आरंभ १८५७ प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद माना जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी पुनर्जागरण काल के द्वितीय अग्रदूत हैं। उनका साहित्य समाज सुधार और राष्ट्र भक्ति की पूरजोर पहल करता है। उन्होंने हिंदी नवजागरण को एक नई दिशा देने का कार्य किया है। उनकी राष्ट्रभक्ति को अलग दृष्टि से देखने की आवश्यकता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र का हिंदी नवजागरण सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक समस्याओं के प्रति जागरूकता पैदा करने वाला रहा है और राष्ट्रीय एकता एवं स्वतंत्रता आंदोलन की हिमायत करने वाला भी। भारतेंदु हरिश्चंद्र का नव जागरण का सशक्त प्रमाण उनकी रचनाओं में पाया जाता है।

की–वर्ड

नव जागरण, भारतेंदु, शिक्षा, नव चेतना, अंधविश्वास, यथार्थवादी दृष्टिकोण, राष्ट्रप्रेम, जागरूकता, समाज सुधार, राष्ट्रीय एकता।

प्रस्तावना

उन्नीसवीं सदी में भारतीय समाज सामंती शासन की क्रूर शक्तियों और साम्राज्यवादी नीतियों का शिकार था। इसकी मुक्ति के लिए भारतीय मध्यवर्ग में एक नवीन चेतना पैदा हुई। यही नव चेतना परंपरा एवं इतिहास के मूल्यांकन से उभरे जीवंत तत्त्वों को लेकर थी। यही चेतना पाश्चात्य जनचेतना के संयोग से उभरी हुई नजर आती है। इसी नवीन चेतना को भारतीय नवजागरण या पुनर्जागरण के नाम से जाना जाता है। भारत में हिंदी प्रदेशों में भारतीय नवजागरण सन १८५७ प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद में उभरा। डॉ. रामविलास शर्मा ने हिंदी नवजागरण १८५७ की क्रांति से जोड़ा है। यह नवजागरण

राजनीतिक एवं सामाजिक जागरण से संबंधित था। इस नव जागरण में नव जागरण शब्द बंध नया था, मगर धारणा पुरानी थी। नव जागरण को हिंदी में पहले पुनरुत्थान और बाद में पुनर्जागरण कहा जाने लगा। नव जागरण शब्द अंग्रेजी भाषा के रेनांसा शब्द का रूपांतर है। पुनर्जारण शब्द का प्रयोग आचार्य रामचंद्र शुक्ल की 'रसमीमांसा' में भी पाया जाता है। हिंदी साहित्य में भारतेंदु और उनकी मंडलियों ने वास्तविक रूप में नव जागरण की साहित्यिक ज्योति जगाई। ''नव जागरण को हिंदी में पहले पुनरुत्थान और बाद में पुनर्जागरण कहा जाने लगा। इसके अनंतर रामविलास शर्मा ने इसे नव जागरण की संज्ञा दी। अब यही नाम प्रचलित है।''[१] स्पष्ट है कि नव जागरण का दूसरा नाम पुनरुत्थान या पुनर्जागरण है।

भारतेंदु आधुनिक हिंदी के अग्रदूत थे। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'हरिश्चंद्र चंद्रिका', 'कविवचनसुधा', 'बालाबोधिनी' जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया। उन्होंने नाटक, निबंध, व्यंग्य, आलोचना एवं कविताओं का लेखन किया। उन्होंने अंग्रेजी, संस्कृत और बंगला के नाटकों का अनुवाद किया। उनके साहित्य में राष्ट्रीय स्वाधीनता की समस्या प्रमुख रूप से उभरकर सामने आती है। 'नीलदेवी', 'अंधेरी नगरी', 'भारत दुर्दशा' जैसे मौलिक नाटकों में आधुनिक, सुधारवादी, यथार्थवादी दृष्टिकोण के साथ राष्ट्रप्रेम की भावना प्रबल रूप से दृष्टिगत होती है। लगान वसूलना, अनाज महँगा करना, देश को उजाड़ना आदि कार्य अंग्रेज खुलेआम कर रहे थे। भारतेंदु ने इसी अंग्रेजी नीति की खुली आलोचना की। इस संदर्भ में डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं–''भारतेंदु की महत्ता इस बात में है कि वह अंग्रेजी राज्य के सच्चे और कटु आलोचक थे। उनके नाटकों, कविताओं और निबंधों ने जनता को अंग्रेजी राज्य के अन्याय और शोषण के प्रति सचेत किया। भारतेंदु ने अंग्रेजी राज्य की सभ्यता, नेकनीयती और जनतंत्र का पर्दाफाश कर दिया।''[२] कहना आवश्यक नहीं कि भारतेंदु ने अंग्रेजी राज्य की सभ्यता, जनतंत्र, अन्याय एवं शोषण का कड़ा विरोध किया।

भारतेंदु साहित्यकार, पत्रकार, संपादक के साथ–साथ समाजसुधारक भी थे। उन्होंने नवजागरण के दौर में धार्मिक अंधविश्वास एवं पाखंड का विरोध किया। साथ ही सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया। उन्होंने नशापान तथा पशुबलि का कड़ा विरोध किया, जिसका जिक्र 'वैदिक हिंसा हिंसा न भवति' नाटक में स्पष्ट रूप से हुआ हैं–''बस चुप, दृष्ट। जगदम्ब कहता है और फिर इसी के सामने उसी जगत के एक बकरे को अर्थात उसके पुत्र ही को बलि देता है और दुष्ट अपनी अम्बा कह, जगदम्बा क्यों कहता है, क्या बकरा जगत के बाहर है? ... दुष्ट कहीं का वेद–पुराण का नाम लेता है, मांस–मदिरा खाना–पीना है तो यों ही खाने में किसने रोका है, धर्म को बीच में क्यों डालता है।''[३] इसी प्रकार भारतेंदु ने पंडे–पुजारियों का पाखंड, अधार्मिक कार्य एवं समाज विघातक कार्य करने वालों की

कड़ी आलोचना की और अपने नाटक के माध्यम से सामाजिक अंधविश्वास को दूर करने का प्रयास किया है ।

वस्तुत: सन् १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम एक ओर भारतीय समांत वर्ग से लड़ रहा था तो दूसरी ओर अंग्रेजों के साथ लड़ रहा था। इस संदर्भ में डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं–''भारत में अंग्रेजों के मुख्य सहायक यहाँ के सामंत थे। सन् ५७–५८ में कश्मीर से लेकर बंगाल तक के जमींदारों और राजाओं–नवाबों ने अंग्रेजों की मदद की।''[४] दरअसल सन् १८५७ की क्रांति ने भारतीय जनमन को प्रेरित किया, मगर अंग्रेजों ने इस क्रांति का विनाश कर दिया। भारत की प्राचीन व्यवस्था यानी उद्योग, व्यापार, कृषि आदि को ध्वस्त कर दिया। भारतीय सांस्कृतिक कला–गुणों को कुचल दिया। चहुँ ओर अराजकता मची। चारों ओर शोषण की सरगमें व्याप्त थी। किसानों से लगान वसूलकर तंग किया जाता था। उनको नील की खेती करने के लिए मजबूर किया जाता था। किसान भूखे मरने लगे। सैनिकों को अपने देश के विरुद्ध खड़ा कर दिया गया। अंग्रेजों की आर्थिक नीति के बारे में भारतीय जनता को जागृत कराने हेतु भारतेंदु हरिश्चंद्र २६ फरवरी, १८७४ की 'कविवचन सुधा' और अन्य पत्रिकाओं का सहारा लिया। अंग्रेजों ने भारतीय जनता को कला–कौशल से विमुख रखा। वे व्यापारी बनकर भारत में आए और धन–धान्य लेकर चले गए। अंग्रेजों की इसी लुटारू एवं शोषक नीति का भारतेंदु हरिश्चंद्र खुलकर विरोध किया। भारतेंदु अपनी पत्रिका 'कविवचन सुधा' में अंग्रेजों की शोषक नीति का परिचय खुलेआम देते हैं और इस बात का खेद भी जताते हैं कि जिसमें भारतीय जनता को कला–कौशल से अलग रखा।

आधुनिक काल में यूरोपीय पुनर्जागरण की भाँति भारतीय पुनर्जागरण का आंदोलन चल पड़ा। इस आंदोलन में ब्राह्म समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसायटी, रामकृष्ण मिशन, इंडियन नेशनल कांग्रेस जैसी संस्थाएं अग्रणी रही है। गोपाल कृष्ण गोखले, दादाभाई नौरोजी, बाल गंगाधर तिलक, लाला लचपतराय, स्वामी श्रद्धानंद, मदनमोहन मालवीय जैसे समाज सुधारकों ने समाजिक सुधार यानी पुनर्जागरण का कार्य किया। राजा राममोहन राय ने स्त्री–शिक्षा तथा सती प्रथा आंदोलन सफल किया। इस संदर्भ में डॉ. रमेशचंद्र शर्मा लिखते हैं–''यूरोपीय पुनर्जागरण शैली पर 'भारतीय पुनर्जारण' ने अंगडाई ले ली। ब्राह्म समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसायटी, रामकृष्ण मिशन, इंडियन नेशनल कांग्रेस जैसी संस्थाएं स्थापित हुई। इन संस्थाओं के प्रयासों से जनसमाज में जागरण व पुनरूत्थान के आंदोलन चल पड़े। सर्वश्री गोपाल कृष्ण गोखले, दादाभाई नौरोजी, बाल गंगाधर तिलक, लाला लचपतराय, स्वामी श्रद्धानंद, मदनमोहन मालवीय आदि नेताओं और निःस्वार्थ समाज सेवियों ने

सुप्त देशवासियों को झकझोरा तथा उनकी आत्म विस्मृत भावनाओं को उद्दीप्त किया। फलत: जनजीवन में राष्ट्रभक्ति का ज्वार उमड़ने लगा।''[६] उक्त कथन से विदित होता है कि भारतीय समाजिक संस्थाओं और समाज सुधारकों ने नवजागरण का आंदोलन तेज किया। साथ ही देशवासियों की आत्म विस्मृत भावनाओं का उद्दिपन किया।

भारतेंदु के करनी और कथनी में अंतर नहीं था। दरअसल भारतेंदु समाज के गरीब लोगों को काफी मदद किया करते थे। अपनी बहुत-सी पैतृक उन्होंने दान दे दी थी। समाज में स्त्रियों की स्थिति देखकर वे चिंतित थे। उनका चिंतन स्त्री-शिक्षा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह जैसी समस्याओं को लेकर था। अंग्रेज अधिकारियों के साथ खुलेआम गोरी मेम घूमती थी जिसे देख वे नीलदेवी में लिखते हैं-''जिस भाँति अंग्रेजी स्त्रियाँ सावधान होती हैं, अपने संतान गण को शिक्षा देती है, पढ़ी-लिखी होती हैं, घर का कामकाज संभालती हैं, अपना सत्व पहचानती हैं, अपनी जाति और अपने देश की संपत्ति-विपत्ति को समझती हैं, उनमें सहायता देती हैं और इतने समुन्नत मनुष्य जीवन को व्यर्थ गृह दाह और कलह ही में नहीं खोतीं, उसी भाँति हमारी गृहदेवियाँ भी वर्तमान हीनावस्था का उल्लंघन करके कुछ उन्नति प्राप्त करें यही लालसा है।''[७] स्पष्ट है कि भारतेंदु भारतीय स्त्री की उन्नति अंग्रेजी स्त्रियों की भाँति स्वीकार करते हैं। वे स्त्री-शिक्षा, समानाधिकार, स्वतंत्रता, विधवा विवाह की हिमायत करते हैं। भारतेंदु पर स्वामी दयानंद और केशवचंद्र सेन की समाज सुधार आंदोलन का काफी प्रभाव था। भारतेंदु की समाज सुधार या नव जागरण के संदर्भ में परशुराम शुक्ल 'विरही' का कहना है कि ''भारतेंदु के समाज सुधार संबंधी विचारों का पूर्ण परिचय उनके 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?' नामक व्याख्यान से प्राप्त होता हैं। बलिया में संवत १९३४ में दिये गये इस व्याख्यान में भारतेंदु ने देश में प्रचलित बाल-विवाह, बहुविवाह, धर्माडंबर आदि का विरोध किया और समुद्र यात्रा, स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, धार्मिक उदारता आदि का समर्थन और प्रचार किया। अपने देश-वासियों को उन्होंने संदेश दिया कि बहुत-सी बातें जो समाज विरूद्ध मानी हैं किंतु धर्मशास्त्रों में जिनका विधान है उनको चलाइये। जैसे जहाज का सफर, विधवा विवाह आदि। लड़कों का छोटेपन ही में विवाह करके उनका बल, वीर्य, आयुष्य सब मत घटाइये। आप उनके माँ-बाप हैं या उनके शत्रु हैं। विद्या कुछ पढ़ लेने दीजिये, नोन-तेल-लकड़ी की फिक्र करने की बुद्धि सीख लेने दीजिये तब उनका पैर काठ में डालिये। कुलीन प्रथा, बहु-विवाह को दूर कीजिये। लड़कियों को भी पढ़ाइये। ऐसी चाल से उनको शिक्षा दीजिए कि वह अपना देश और कुल-धर्म सीखे, पति की भक्ति करें और लड़कों को सहज में शिक्षा दें।''[८] स्पष्ट है कि भारतेंदु ने बाल-विवाह, बहुविवाह, धर्माडंबर का विरोध किया और समुद्र यात्रा, स्त्री शिक्षा, विधवा

विवाह, धार्मिक उदारता का समर्थन किया। उन्होंने कुलीन प्रथा, बहु–विवाह दूर करने का प्रयास किया और लड़कियों को पढ़ाने, देश और कुल–धर्म सीखाने, पति की भक्ति करने और लड़कों को सहज में शिक्षा दिलाने का नव जागरण किया।

निष्कर्ष

निष्कर्षत: कहा जाता है कि भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी पुनर्जागरण काल के अग्रदूत माने जाते हैं; जो एक साहित्यकार, अनुवादक, कवि, पत्रकार, संपादक रहे हैं। उनका साहित्य समाज सुधार और राष्ट्र भक्ति की हिमायत करता है। हिंदी नवजागरण को उन्होंने एक नई दिशा देने का कार्य अहम कार्य किया है। उनकी देशभक्ति पर अंग्रेजीयत हावी दिखाई देती है। मगर ऐसा नहीं है। उनकी राष्ट्रभक्ति को अलग दृष्टि से देख जाने की जरूरत है जो उनके साहित्य के माध्यम से स्पष्ट हो जाती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र का हिंदी नवजागरण सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक समस्याओं के प्रति जागरूकता पैदा की। यहाँ तक कि उनका नव जागरण राष्ट्रीय एकता एवं स्वतंत्र चेतना को जगृत करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१) बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी आलोचना के बीज शब्द, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ–५५.

२) डॉ. रामविलास शर्मा, भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ –६३

३) भारतेंदु हरिश्चंद्र, वैदिक हिंसा हिंसा न भवति, खंडविलास प्रेस, बाँकीपुर, पृष्ठ–२६

४) डॉ. रामविलास शर्मा, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नव जागरण, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ – ११

५) डॉ. रमेश चंद्र शर्मा, विद्या साहित्यिक निबंध, विद्या प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ – १६२

६) भारतेंदु हरिश्चंद्र, नील देवी, खंडविलास प्रेस, बाँकीपुर, पृष्ठ –०५

७) भारतेंदु हरिश्चंद्र, भारत दुर्दशा, खंडविलास प्रेस, बाँकीपुर, पृष्ठ –३८